B.A. Part - 1 (H of Subsi) Philosophy

डॉ अनीमा कुमारी गुप्ता
डॉ० के० कॉलेज सिवान

जैन - दर्शन में बंधन की अवधारणा।

जैन दर्शन के अनुसार कर्म पुद्गलों का जीव की ओर प्रवाह आस्रव कहलाता है। आस्रव दो प्रकार के होते हैं (i) भावास्रव तथा (ii) द्रव्यास्रव जैनों के अनुसार आनेवाले कर्मों के मार्ग को सर्वथा अवरुद्ध कर देना 'संवर' कहलाता है। संवर भी दो प्रकार के हैं, (i) भाव संवर (ii) द्रव्यसंवर। जैनियों के अनुसार जब कर्म पुद्गल जीव में घुसकर उसे बाँध या जकड़ लेते हैं तब उसे बन्ध कहा जाता है। ये भी दो प्रकार के होते हैं (i) भाव बन्ध (2) द्रव्य बन्ध। जैनियों के अनुसार 'निर्जरा' उसे कहा जाता है जिसमें जीव में विद्यमान कर्मों को दर्शन, ज्ञान और चरित्र की सहायता से साफ करके सर्वथा क्षय कर देना होता है। जब कर्म पुद्गल का जीव में आत्यन्तिक क्षय हो जाता है तब जीव अपने सहज सर्वज्ञ रूप में प्रकाशित होता है यही मोक्ष है। यही केवल ज्ञान की प्राप्ति है। जैन-दर्शन के त्रिरत्न - सम्यक दर्शन अर्थात श्रद्धा सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र - मोक्ष प्राप्ति के मार्ग माने गये हैं। सम्यक चरित्र के लिए जैन-दर्शन में 'पञ्चव्रत' का पालन आवश्यक है ये हैं (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) क्षमा (iv) तप (v) संयम (vi) त्याग (vii) विरक्ति (viii) मार्दव (ix) सरलता (x) और ब्रह्मचर्य।